सवैये

<u>सवैये का सार / प्रतिपाद्य</u>

इस पाठ में कृष्ण तथा उनसे जुड़ी वस्तुओं के प्रति एक भक्त का प्रेम अभिलक्षित होता है। भक्त के लिए भगवान महत्वपूर्ण है। उसका प्रेम इतना पवित्र है कि वह उसमें ही रम जाना चाहता है। गोपियों के माध्यम से वह यह व्यक्त करना चाहता है कि प्रेम हमारे अंदर बेजान वस्तुओं के प्रति ईर्ष्या भाव उत्पन्न कर सकता है। भक्त को बस अपने भगवान की याद रहती है और सबकुछ व्यर्थ लगता है। चौथे सवैये में रसखान कृष्ण की बाँसुरी के अद्भुत स्वर का वर्णन करते हैं, जिसे सुनकर ब्रजवासी सबकुछ भूल जाते हैं।

<u>सवैये का भाव</u>

➽ पहले तथा दूसरे सवैये में कवि अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण की जन्मस्थली तथा उनसे जुड़ी हर वस्तु के लिए सारे सुख न्योछावर कर देना चाहता है।

➽ तीसरे सवैये में गोपियों कृष्ण से इतना प्रेम करती हैं कि कृष्ण की प्रिय बाँसुरी के प्रति ईर्ष्या का भाव अपने हृदय में रख लेती हैं।

➽ चौथे सवैये में ब्रजबासी कृष्ण की बाँसुरी सुनकर स्वयं को वश में नहीं रख पाते और उसकी ओर खींचे चले जाते हैं।

<u>भाषा शैली की विशेषताएँ</u>

➽ सरल भाषा

➽ प्रवाहमयी भाषा

➽ सवैये छंद का प्रयोग

➽ अलंकारों का सुंदर प्रयोग

➽ गेयता का गुण विद्यमान

➽ माधुर्य गुण से युक्त ब्रजभाषा

<u>सवैये का उद्देश्य</u>

➽ कृष्ण का बखान।

<u>सवैये से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा</u>

➽ यह पाठ हमें सच्ची भक्ति करने के लिए प्रेरित करता है।

ISC COACHING CENTRE